International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भाषा और संस्कृति में सिनेमा और मीडिया का योगदान

डॉ कामराज सिन्धु

भूमिका -

भाषा किसी व्यक्ति , समाज, संस्कृति या राष्ट्र की पहचान होती है । वास्तव में भाषा एक संस्कृति है , उसके भीतर भावनाएं, विचार ,सम्प्रेषण और सदियों की जीवन पध्दति समाहित होती है । भाषा ही परम्पराओं और संस्कृति से जोड़ कर रखने की एक मात्र कड़ी है। भारत में राम-राम या प्रणाम आदि सम्बोधन व्यक्ति को व्यक्ति से तथा समष्टि से जोड़ने वाली सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां हैं वह चाहे व्हा बीएचजीडबल्यूएन को सम्बोधन करना हो । उदाहरण के लिए प्रथम सम्बोधन के समय हम हाथ मिलाकर गुड मार्निंग नहीं करते हैं , बल्कि हाथ को जोड़कर राम या अन्य भगवान का नामोच्चारण करते हैं , यही भारतीय संस्कृति का परिचय होता है । यह नामोच्चारण एक तरफ हमें मर्यादा अथवा सम्बन्धित भगवान की विशेषता के कारण अर्जित युग-युगान्तकारी ख्याति की याद दिलाता है तो दूसरी तरफ राम जैसे शब्दों का उच्चारण हमारी अन्त:स्रावी (एंडोक्राइन) ग्रंथियों योग की भाषा में चक्रों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है । हाथ मिलाकर हम रोगकारी जीवाणुओं के विनिमय से भी बच जाते हैं । हाल ही में करोना से बचाने के लिए विश्व के सभी जन समुदाय ने भारत के हाथ जोड़ने वाली परंपरा को चुना और अपने आप को सुरक्षित रखा । । अमेरिकी वैज्ञानिकों ने फिस्ट बम्प से भी दस प्रतिशत रोगाणुओं के विनिमय का खतरा बताया था यानी हाथ जोड़ना स्वत: ही श्रेष्ठ सिद्ध हो चुका है।

भारत मे सदियों से नैतिकता के प्रश्न प्रत्येक क्षेत्र में उठते रहे है। विशेष रूप से जिन का सम्बन्ध समाज और संस्कृति से है । नीतिगत प्रश्नों का उठना स्वभाविक होता है । हिंदी भाषा आज पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाये हुए । विश्व भर में जगह - जगह अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी हो रहा है। सिनेमा,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार का एक माध्यम हिंदी है। सिनेमा , हिंदी भाषा , भारतीय सभ्यता और संस्कृति तीनों के ही वैश्विक प्रसार एवं प्रचार का वर्तमान समय में एक बहुत ही सशक्त माध्यम बन हुआ है। क्योंकि भारतीय अस्मिता की झलकियाँ हमें हिंदी सिनेमा में मिलती है और हिंदी सिनेमा को विदेशों को बहुत पसंद किया जाता है । आज भारतीय पुरातन ज्ञान, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को विश्व गुरु के रुप में देखा जाता है,। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अवधारणा भाषा के बिना अधूरी है।वैसे ये भारत की पौराणिक , ऐतिहासिक, सामाजिक, राजकीय, साहित्यिक धार्मिक जैसी सम्पूर्ण अवधारणाओं को हमारे सम्मुख खड़ा किया है। साथ ही हमारी भाषा सभ्यता और संस्कृति और विदेशी संस्कृति के बीच हिंदी सिनेमा एक सेतु का काम कर रहा है। सिनेमा भाईचारों और विश्व बंधुत्व का सवाहक है। विश्व संस्कृति से संवाद स्थापित करने के लिए सिनेमा ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं विविधता को प्रदर्शित करने का असीम प्रयास किया है। शायद इसीलिए प.जवाहरलाल नेहरू जी ने सिनेमा को विश्व सभ्यता , संस्कृति एवं भाषा को देखने की खास खिडकी कहा था "। क्योंकि मानव इतिहास में मनोरंजन के सभी साधनों में सिनेमा उन सब से चरम उत्कर्ष है। और नाटक विधा की सीमाओं को लॉघकर सिनेमा सटीक काल्पनातीत चलचित्रांकन कर सकता है। अवतार, रोबोट, टायटनिक जैसी फिल्मे इसका बहुत सटीक उदाहरण प्रस्तुत करती है। इन फिल्मे में कैमरा और कल्पनाओं का कमाल देखा जाता हैं।

हिंदी सिनेमा विदेशी सिनेमा की कुछ अच्छी तकनीक तत्त्व एवं प्रवृत्तियाँ को अपना रहा है। परिणाम स्वरुप हिंदी सिनेमा का अपना एक स्तरीय अतर्राष्ट्रीय स्वरुप विकसित हो रहा है। हिंदी सिनेमा अपने विषयों और संवेदनाओं के सामर्थ के कारण सात समुन्दर पार जा विदेशों में भी लोकप्रिय हो पाया है। साथ ही पूरे विश्व में बसै भारतीयता अन्त स्थल की एकता को बल दे रहा है । और विश्वभर में फैली लघु भारतीयता को उसका स्वरूप दिखने में कामयाब भी हो रहा है । सचमुच सिनेमा कला अंतर्राष्ट्रीय भाषा एवं संस्कृतिक सीमाओं को लांघने वाला श्रेष्ठ माध्यम है। इसलिए सिनेमा विश्व भाषा और विश्व संस्कृति का प्रतिक बन गया है। विश्व में इस कला का स्वागत कर ते है। भारतीय प्रवासी नागरिक भारत से दूर रहकर भी छोटे और बडे पर्दे में समग्र भारत को देखकर भारत की निकटता दिखाई देती है ।विदेशी एवं प्रवासी भारतीयों के सामाजिक और संस्कृति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के परिप्रेक्ष्य मे हिंदी सिनेमा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। और यही कारण है कि हिंदी भाषा और हिंदी सिनेमा का अधिपत्य आज विश्व के अनेको देशों में दिखाई देता है । सही मायने में सिनेमा एक सशक्त चलचित्रित भाषा है। जब से सिनेमा ने बोलना शुरु किया तब से हमारे महान सिनेमाकारों ने देश विदेश में व्याप्त सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर विषयों को सिनेमा का विषय बनाया है। सिर्फ विषय ही नहीं बनाएँ बल्कि देश-विदेश के जनमानस को समायानुकूल मुद्दों से परिचित कराते हुए उन्हें सोचने समझने के लिए बाध्य किया है।सिनेमा प्रवासी भारतीय के लिए स्वदेश की स्मृतियाँ है। स्वदेश से कटकर कर रहने वाले प्रवासी भारतीय की अधूरी जिन्दगी को पूरा करने का जरिया भी है।

यह विज्ञान का वरदान ही है जो सिनेमा का सामर्थ साबित कर रहा है कि आज हिंदी सिनेमा सेटेलाइट और इन्टरनेटे की अत्याधुनिक टेकनोलॉजी से सात समुन्दर पार विश्व के कोने कोने में रहने वाले विदेशियों और प्रवासी भारतियों तक उसी पल पहुँच रहा है। इन सिनेमाओं ने भारतीयों के अंतरंग में झाँकने का प्रयास किया है। आज सिनेमा के क्षेत्र में ऐसा मोड़ आया है कि मानवीय संवेदनाओं की सोच और संवेदनाओं के क्षितिज को असीम विस्तार दे रहा है क्योंकि सिनेमा भाषिक सीमाएँ लाँघने की सक्षम विधा है। ऐसी कोई भी कला नहीं जो सिनेमा जैसा सर्वगुण संपन्न हो । इसलिए हिंदी सिनेमा आज न केवल अंतर्राष्ट्रीय पुरुषकार जीत रहा है। बल्कि हिंदी सिनेमा के निर्देशकों एवं सिने कलाकारों को अतर्राष्ट्रीय ख्याति भी दिला रहा है ।

विदेशी एवं प्रवासी भारतीय द्वारा संचलित स्वमंसेवी ,सरकारी संस्थाओं का अवदान विश्व भर में हमारे भारतीय लोग जिनेमें कुछ मूल भारतीय है तो कुछ पढ़ने पढ़ाने के लिए ,तो कुछ इंजिनियर ,डॉक्टर, व्यवसाय या नौकरीयों के लिए रच बस गए हैं ।हिंदी जिस तरह से आम भारतीय की भाषा है उसी तरह विश्व भर में रचे बसे भारतीय प्रवासियों की भी अभिव्यक्ति की भाषा है। भारतीय मूल के लगभग 5 करोड लोग विश्व के उन देशो में रचे बसे है। फिजा ,मॉरीसेस, सूरीनामा, गियाना, नीदरलैड, त्रिनीडंडा,कनॅडा,रुस, अमेरिका स्वीडन डेनमार्क,जर्मन नार्वे ,नेपाल श्रीलंका , पाकिस्तान, थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, न्यजीलैण्ड, इंडोनेशियाँ, दुबई,कुवैत इटली, जापन रुमानियाँ,हंगेरी, यूरोप के आदि इन सभी देशों के लोग हिंदी को अपनी पूर्वोजों की भाषा मानते है। और शायद यह भी एक कारण हैं कि वे हिंदी बोलना और हिंदी सिनेमा देखना पसंद करते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिंदी भाषा और हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता का दूसरा कारण व्यवसाय और बाजार की जरुरत है। जिनमें कार्टून नेटवर्क, सोनी, डिस्कवरी जैसे ढेरों चैनल हिंदी को लेकर विश्व भर के देशों में घुसपैठ कर रहे है। लेकिन विश्वभर के रचे बसे भारतीय विशाल जनसमुदाय को अपना दर्शक बनाने के लिए व्यवसायिक विवसता से मजबूर होकर इन सारे चैनलों मे हिंदी को अपनाना ही बेहतर लग रहा है। विश्व बाजार के मंच पर हिंदी और हिंदी सिनेमा की क्षमता विदेशियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बडे ही मुनाफे का कारण बन गया है। केवल मुनाफा ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय कीर्ति और सम्मान भी इसी कारण मिला है। आज लगभग 200 विज्ञापनों में हिंदी की धाक जमी हुई है। आज सभी फिल्म निर्माता , अंग्रेजी,चाइनीज, जापानी, रशियन आदि भाषाओं को हिंदी में डब करके प्रस्तुत कर रहे है। क्योंकि हिंदी उनके लिए सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी साबित हो रही है। आज हम यदि खोज करे तो स्त्रोत से प्राप्त ऑकडे बताते है कि देश और विदेशों में सर्वाधिक सिनेमा हिंदी में अनुवादित एवं प्रदर्शित की जा रहे है, टायटैनक,अवतार,स्पाई,किडस, हैरी पोटर, स्पाइडर मैन ये फिल्में भारत ही नही बल्कि पूरे विश्व भर में बसे प्रवासी भारतीय मे भी देखी और पसंद की जाती है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हो या नामचीन भारतीय निर्देशक हो वे सभी अपने कार्यलयों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भले ही करते हो परन्तु व्यवसायिक प्रतियोगिता में उनको हिंदी की जरूरत की जरुरत पडती है। अपने उत्पादनों को विश्वभर के प्रवासी भारतीय समाज की आवश्यकतानुरुप पहुचाने के लिए उन्हे हिंदी का सहारा लेना पडता है। चाहे उसमें कनाडा का एफएम रेडियों ही क्यों न हो भले ही अंग्रेजी का तड़का हो लेकिन दाल हिंदी की ही रखनी पडती है, यह भारतीय एवं पाश्याच्य सिनेमाकारों की विवशता भी है और हिंदी के सामर्थ का प्रमाण भी.

विश्व भर के 32 देशों से अधिक में बसे 5 करोड से अधिक प्रवासी भारतीय जनसमुदाय की शिक्षा के लिए हिंदी का अध्ययन और अध्यापन शुरू हो रहा है। अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र के लगभग 90 विश्विविद्यालयों में ही हिंदी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। इसके अलावा सैकडों और भी छोटे बडे केन्द्रों में भी पी.एच.डी. शोध कार्य हिंदी में हो रहा है। आज तो स्थिति इतनी बेहत्तर है कि स्वयं विश्वभर के हिंदी विद्वान् हिंदी में लेखन, अध्यापन, शोधकार्य भी करवा रहें है। और अब विदेशी अपने निर्देशन में हिंदी सिनेमा बना रहे है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इससे बेहत्तर हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्थिती और स्वरुप क्या हो सकता है किंतु आज विश्व भर में हिन्दी भाषा मे सिनेमा के अलावा किसी और भाषा का सिनेमा लोकप्रिय नहीं है । आज महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों एवं हिंदी हितैशी संस्थाओं को महा विद्यालय एवं विश्वविद्यालय की कक्षाओ में हिंदी सिखाने समझाने में जितना समय लगता है। उससे कही बहुत कम समय में हिंदी सिनेमा अपने दृश्यों और गीतों के माध्यम से समझा जाता है। सांस्कृतिक शब्दावली व्रत उपवास, शादी-ब्याह के प्रोग्राम मुहावरे, कहावते, तीज- त्यौहारो में रंगो की होली और दीप की दीवाली आदि के द्वारा हिंदी सिनेमा समग्र भारतीयता के दर्शन कराता है।फिल्में भले ही मनोरंजन का उत्तम माध्यम है लेकिन उससे कही अधिक आज के युग में वह ज्ञानधर्मी ,प्रबोधन, समुपदेशन, प्रशिक्षण एवं शिक्षा दिक्षा को सबसे बेहतर जरिया है ।वह और दृश्य श्रव्य माध्यम को दिखाकर या देखकर सिखने और सिखाने में बहुत अंतर है। क्योंकि सिनेमा में जो भाव अभिनय के समर्थ के साथ दिखाए जाते है वे किताबों के द्वारा अनुभव नहीं किए जा सकते। हिंदी सिनेमा न पाठ्य पुस्तकों को संगीत , भाषा, भाव आदि के द्वारा परदे पर मुखरित किया है। भारतीय अभिभावक भी अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता से परिचित करने तथा हिंदी भाषा सिखाने अपने बच्चों को हिंदी सिनेमा देखने के लिए प्रोत्साहित करते है।

विश्व भर में अनेक अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र हिंदी में प्रकाशित होते है। तथा रेडियों भी अक्सर अपने हिंदी सिनेमा से केंद्रित प्रोग्रामों के द्वारा हिंदी के प्रसार में अपना योगदान देता है तथा विश्व भर में हजारों विद्वान कलाकार अपनी कला की अभिव्यक्ती हिंदी जनसंचार माध्यम के जरिए प्रस्तुत करते है। ये सारे संदर्भ और प्रमाण इस बात के साक्षी है कि संसार के नक्से में बडी संख्या में और ज्यादा मात्रा में समझी जाने वाली भाषा हिंदी ही है। और आज हिंदी भाषा जनसंचार में अंग्रेजी के सामने आ डटी है। ऑकडो का विश्लेषण यह भी सिद्ध कर र हा है कि चीन की भाषा मंडारिन के बाद अधिक हिंदी भाषा बोली जा रही है। विश्व में हिंदी का प्रयोग करने वालों की संख्या चीन से अधिक है।आज अब हिंदी प्रथम स्थान पर है(श्त्रोत दैनिक हिंदुस्तान २५ अप्रैल २००५) अमेरिका जैसे देश में बी.बी.सी. नई दुनियाँ , दैनिक जागरण, नवभारत, वेब दुनिया, भारतीय दर्शन, राजस्थान पत्रिका जैसे जनसंचार माध्यमो में भी हिंदी सिनेमा की चटपटी , मसालेदार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खबर तथा विज्ञापन छपते रहते है। इतना ही नहीं इन्टरनेट की दुनिया में एक क्लिक पर प्रवासी भारतीय के लिए नई प्रदर्शित होने वाली फिल्में उनका कथ्य तथा विज्ञापन धर्मी सूचनाएँ उपलब्ध होती है। संचार माध्यमों के इलेक्ट्रानिक मीडिया में टी.वी. चैनलों की भरमार है। स्टार , जी सिनेमा, सोनी जैसे चैनलों पर रामायण, महाभारत, पारिवारिक, हास परिहास, कॉमेडी सीरीयलों की भरमार है। जिनमें से कुछ सीरीयल नच बलिए, पवित्र रिश्ता, रब ने मिला दी जोडी, बात हमारी पक्की है, बेटियाँ, छोटी बहु, न आना इस देश मेरी लाडों, सास बिना ससुराल ,सास भी कभी बहू थी ,तारक मेहता का उल्टा चश्मा आदि काफी लोकप्रिय है। जिन्होंने देखने में विदेशी भी पसंद करते है। पाकिस्तान हो या तुर्मेनिक्स्थान ,उज्बेकिस्तान , अमेरिका हो या रशियाँ दुनियाँ के किसी भी कोने का व्यक्ति इसके देखने में अपनी रूचि दिखता है ।

हिंदी भले ही भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई हो लेकिन यह किसी एक देश की भाषा नहीं बल्कि पूरी दुनिया में इस भाषा को लेकर प्रयोग किये जा रहे हैं। कहीं हिंदी को लेकर शोध संस्थान खुल गए है तो कहीं कहीं पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन भी बड़ी कामयाबी के साथ हो रहा है जिस का ताजा उधाहरण कनाडा में 2018 में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन और विश्व साहित्य रथ की गूंज जो कनाडा की सड़कों पर देखा जाता है ।

विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय अपने देश की परंपरा , भाषा, अपने देश की संस्कृति आदि का समन्वय सिनेमा में देखते है। भारतीय मूल के लोग जब विदेश गये तो अपने साथ भारतीयता के अनेक प्रतिक जैसे सभ्यता,संस्कृति, तीज त्यौहार, रीति रिवाज,पूजा आदि खान पान अपने मानवीय मूल्य आदि को साथ लेकर गए और जहाँ रहे वहाँ उन्होंने एक लघु भारत का निर्माण किया उनके अवचेतन में बसी भारतीयता उन्हे सिनेमा में दिखाई देती है। हिन्दी सिनेमा का रिश्ता भारत से जुडा रहता है। अपनी जुबान और संस्कृति से जुडे रहने का मोह उन्हें सिनेमा से बाधता ही नही बल्कि उन्हे कुछ क्षणों के लिए अपने देश के करीब भी ले आता है। बल्कि भारत में होने का एहसास कराता है। आज जीवन की तमाम समग्रता को लेकर सिनेमा उनके

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विचारों एवं भावनाओं साधारणीकरण करके उन्हे अपनी गॉव की ग्राम सभ्यता एवं मिट्टी की गंध से जोडे रखता है। परदेश, दिलवाले दुल्हानियाँ ले जायेगे , चाँदनी, कभी खुशी- कभी गम , आ अब लौट चले जैसी फिल्मों में प्रवासी भारतीय को देश से जुडे रहने के कारणों को दिखाकर द्रवित करती है। साथ ही उनका भारतीयपन पुन जीवित हो उठता है ऐसे ढेरो कारण है जो उन्हे भारतीय सिनेमा से जोडे रखते है। सिनेमा में दिखाई गई विभिन्न बोलियों के गीत , शादी ब्याह की रस्में आदि उनमें कौतुहल जिज्ञासा भी पैदा करती है और लुभाते भी है।

सिनेमा के दृश्य प्रसंगों से उनको और अधिक महत्वाकांक्षा और कल्पनात्मक ,भावानात्मक रुप से बाँधते है। इसलिए प्रवासी भारतीय में हिंदी सिनेमा के प्रति अस्मिता का भाव नस नस में समाया है। उनको अधिक अच्छा लगता है कि जिस भाषा में इन्होंने जीवन अनुभवों को जिआ समझा तथा जिनके साथ बडे हुए सिनेमा में वही सब कुछ देखना व गीतो में सुनना बडा ही अपना पन लगता है।

निष्कर्ष - भारतीय भी अपने विदेशी दर्शक के लिए अपने उत्तरदायित्व को बाखूबी निभाते हुए उन्हें मूल्यधर्मी सिनेमा से जोडे रखते है। और इसी वजह से प्रवासी भारतीय के जीवन का अविभाज्य हिस्सा बन जाता है। आज हमारी हिंदी फिल्में विश्वभर के सिनेमा घरों के बॉक्स ऑफिस पर मुनाफा कमाने के साथ लोकप्रियता का शिखर छू रही है। उसका सारा श्रेय प्रवासी भारतीयों को जाता है। कुछ फिल्में जो विदेश में रहने वाले भारतीयों की सामाजिक, पारिवारिक, दाम्पत्य जीवन संबंधी मूल्यों की टकराहट तथा उनकी व्यस्तता में डूबी दुविधा मन:स्थिती के बखूबी अभिव्यक्त हो रही है जैसे कभी अलविंदा न कहना , न्यूयॉर्क, माय नेम इज खान, नमस्ते लंडन, उपकार, पूरब पश्चिम, आ अब लौट चले , दिलवाले दुल्हनिया ले जायेगे ,परदेश, बागबान आदि फिल्में विदेशों में भी प्रसिद हो रही है। साथ ही फिल्मों के कुछ गीत प्रवासीयों की जुबानी जैसे रच बस गयें है जैसे नाम फिल्म का गीत चिठ्ठी आई है आई है। चिठ्ठी आई है बडे दिनों के बाद हम बे वतनो को याद, बतन की मिठ्ठी आई है। तथा दिलवाले दुल्हनियाँ ले जायेगे का गीत "घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाए " देश की हुक उठाता है तो परदेश का गाना "ये दुनियाँ एक दुल्हन दुल्हन के माथे की बिदियाँ आई लव माय इण्डियाँ" के बोल

उनकें अंदर भारतीयता और भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है । तो वही धार्मिक , पौराणिक एवं ऐतिहासिक फिल्में प्रवासी भारतीयों को कई संदर्भो में अपने देश से दूर रहकर भी मानसिक और भावनात्मक स्तर पर अपनी जन्मभूमि, से जुडे रहने की याद दिलाती रहती है। ये उनकी मनोवैज्ञानिक जरुरत भी है। और सिनेमा उसकी जरुरत को पूरा भी करता है जो भारतीय संस्कृति का संवाहक भी है ।

आज हिंदी सिनेमा हमारी भारतीय संस्कृति तथा प्रान्तीय बोलियो को, लोकगीतो कों,दीपों की दिवाली, रंगों की होली,भाई बहन का रक्षाबंधन , ईद, रोजा जैसे त्यौहारो को तथा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को अपने अंदर समेट रहता है। इन सारे प्रवाहों को समेटने के कारण ही हिंदी सिनेमा की सरिता विश्वभर में प्रवाहित हो विशाल सागर का रूप धारण कर रही है। हम कह सकते है हिंदी सिनेमा की अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप भाषिक संस्कृति चेतना को उर्जावान बना रही है। हिन्दी सिनेमा भाषिक एवं सांस्कृतिक चेतना का वहन करने वाली एवं विश्व के मात्र चित्र को छूनेवाली विज्ञान अधिष्ठित सर्वोत्तम कलाओं में विलक्षण, उर्जावान, अपने आपमें सर्वगुण संपन्न भाषा है। विदेशी एवं प्रवासी भारतीयों के लिए हिन्दी सिनेमा अपनी भाषिक , सांस्कृतिक, पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक चेतना से सर्वश्रेष्ठ कला माध्यम है । विज्ञान तकनिक और सर्व कलाओं का समन्वय करके सिनेमा ने कॅमेरा रुपी कलम से सारे विश्व को सिनेमा का कायल बना दिया है। अंत में हिंदी सिनेमा व मीडिया की विश्व व्यापी एवं विश्व मंचीय लोकप्रियता की विराटता को देखते हुए ये मंगल कामना करता हूँ कि हिंदी सिनेमा व भारतीय संस्कृति ऐसे ही विश्व भर में रचे बसें । सभी भारतीय अपनी भाषा,सभ्यता और संस्कृति के संवर्धन में अपना बहुमूल्य योगदान देता रहे ।

सन्दर्भ –

1प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा,श्रीमती कैलास कुमारी सहाय .

2 विदेशों में हिंदी पत्रकारिता डॉ पवन कुमार जैन .

3 ब्रिटेन में हिंदी ,श्रीमती उषा राज सक्सेना २००५.

4 विदेशी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ –भोला नाथ तिवारी ,ईस्ट आजाद नगर दिल्ली -५१ .

5 विदेशों में हिंदी साहित्य का अध्ययन –प्रो वसुधा डालमिया बिजनौर टाइम्स १६ नवम्बर २०१२.

6 राज भाषा हिंदी –डॉ कैलाश चन्द्र भाटिया (१९९४)वाणी प्रकाशन दिल्ली.

7 सविधान सभा और राजभाषा भारती गृह मंत्रालय भारत सरकार –डॉ शंकर दयाल सिंह .

8 हिंदी भाषा और सरंचना –प्रो सूरज भानसिंह (१९९१)दिल्ली .

9 मीडिया की बदलती भाषा –डॉ अजय कुमार सिंह ,लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद २०१२ .

10 मीडिया का यथार्थ –डॉ रत्न कुमार पाण्डेय ,वाणी प्रकाशन दिल्ली २००८ .

11हिंदी भाषा साहित्य और संस्कृति –डॉ पूरनचंद टंडन ,सतीस बुक डिपो दिल्ली ११०००५ .

12 जनसंचार –डॉ हरीश अरोड़ा ,युवा साहित्य चेतना मंडल दिल्ली .